श्रीमद्भगवद्गीता 22/7/2020

श्लोक संख्या - 23

"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥"

हिन्दी अनुवाद -

इस आत्मा को न शस्त्र ~~काट~~ भेद पाते हैं, न अग्नि से दहन ~~जला~~ होपाता है, जल इसको गीला नहीं कर पाता है तथा वायु इसे सुखा नहीं पाता है।

भावार्थ - (शाङ्करभाष्य के आधार पर)

आत्मा के अविक्रियत्व का प्रतिपादन हुआ है। आत्मा में विकार नहीं हो सकते। आत्मा निरवयव पदार्थ है। आत्मा सावयव पदार्थ नहीं है। (क) शस्त्र जैसे तलवार आदि सावयव पदार्थों को ही काट पाते हैं, आत्मा के समान निरवयव पदार्थ को छेद पाना इनके लिए सम्भव नहीं।

(ख) अग्नि भी सावयव पदार्थों को ही जला पाता है। आत्मा के निरवयव होने से अग्नि आत्मा को नहीं जला पाती।

(ग) जल भी सावयव वस्तु को आर्द्र कर पाता है, किन्तु निरवयव आत्मा को गीला करना जल के लिए सम्भव नहीं है।

(घ) वायु पदार्थ में निहित स्नेह का अवशोषण कर उस पदार्थ का नाश करता है किन्तु वायु आत्मा का अवशोषण निरवयव होने से नहीं कर पाता।

(ङ) पृथ्वी, जल, तेज तथा वायु ये चार भूत ही नाशक रूप से मान्य हैं। आकाश किसी का नाश नहीं करता। सबों के कल्याण में आकाश (संलग्न) रत रहता है।

रामानुजाचार्य इस श्लोक के श्रीभाष्य में प्रतिपादित करते हैं— आत्मा सर्वव्यापी है। इसकारण आत्मा सकल तत्त्वों की तुलना में सूक्ष्म है। अतएव शस्त्र, अग्नि, जल तथा वायु इस आत्मा को क्रमशः काटना, जलाना, भींगोना तथा सुखाना आदि क्रियाओं द्वारा नष्ट नहीं कर सकते। शस्त्र, अग्नि जल तथा वायु आत्मा में व्याप्त नहीं हो पाते।